SHRI MANMOHAN SINGH: That does not prove either way ...*(Interruptions)*....

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: I want the information. I do not want any proof....*(Interruptions)*....I want only the information....*(Interruptions)*....

SHRI MANMOHAN SINGH: It is a large investment ....*(Interruptions)*...

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: No. Is there any such investment done elsewhere? *(Interruptions)*

SHRI MANMOHAN SINGH: I do not have figures about the investments in other companies. ...*(Interruptions)*....

SHRI MANMOHAN SINGH: I do not believe that merely the figure of investment makes this investment suspect. I do not accept that argument. I have checked with the UTI for example. The UTI have said that this investment made looks large in absolute amount but in terms of their guidelines on which they operate, it is within that. *(Interruptions)*....

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: That is not the answer. Why massive investment is done only in that? The point is ...*(Interruptions)*....

SHRI DIGVIJAY SINGH: We want a half-an-hour discussion on this ...*(Interruptions)*

SOME HON. MEMBERS: We want a half-an-hour discussion. ...*(Interruptions)*....

SHRI S. JAIPAL REDDY: A JPC enquiry should be conducted. ...*(Interruptions)*....

MR. CHAIRMAN: Give a notice. ...*(Interruptions)*....

SHRI S. JAIPAL REDDY: You please agree to an enquiry by the CBI ...*(Interruptions)*....

MR. CHAIRMAN: You give a notice. Please....I now call Shri Mohammed Afzal for the next question ...*(Interruptions)*.... question. ...*(Interru*

SHRI S. JAIPAL REDDY: He should be given extension because of this new technique of investment. ...*(Interruptions)*....Since Mr. Manmohan Singh is complimenting him I am sure of his extension! ...*(Interruptions)*....

Advertisements Given by DAVP to Newspapers

*22. SHRI MOHAMMED AFZAL alias MEEM AFZAL: Will the Minister of INFORMATION AND BROADCASTING be pleased to state the number of advertisements given by the DAVP to Big, Medium and Small newspapers during the period 1994-95?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRI K. P. SINGH DEO): during the period 1994-95, DAVP issued 1,64,669 insertions of advertisements to various newspapers/ periodicals. The share of big, medium and small newspapers is as under:

Big	—	48,156
Medium	—	56.517
Small	—	59,996
TOTAL :		1,64,669

श्री मोहम्मद अफज़ल उर्फ मीम अफज़ल: सर, मैं वज़ीर-ए-मोहतरम के जवाब की रोशनी में यह जानना चाहता हूं कि बड़े, दरिम्यानी और छोटे अखबारात् को जो इश्तहारात् दिए गए हैं उसका नम्बर तो आपने बता दिया, यह बताने की तकलीफ और गवारा करें कि इन बड़े, छोटे और दरिम्यानी अखबारों में अंग्रेजी अखबारों की तादाद कितनी है, हिन्दी अखबारों की तादाद कितनी है और हिन्दुस्तान की जो दीगर 18 ज़बानों में डी॰ए॰वी॰पी॰ इश्तहार देता है, उनकी तादाद कितनी है और इन अलग-अलग ज़बानों में कितना-कितना बजट 1994-95 में दिया गया है? अगर रुपए में बता सके तो वह बता दें और अगर परसेंट में बता सके तो ज्यादा अच्छा होगा ताकि क्लीअर पोजीशन पता लग जाए।

†[شری محمد افضل عرف م۔ افضل:
سر۔ میں وزیر محترم کے جواب کی روشنی میں یہ جاننا چاہتا ہوں کہ بڑے درمیانی اور چھوٹے اخبارات کو جو اشتہارات دیے گئے ہیں انکا نمبر تو آپنے بتا دیا۔ یہ بتانے کی تکلیف اور گوارا کریں کہ ان بڑے چھوٹے اور درمیانی اخباروں میں انگریزی اخباروں کی تعداد کتنی ہے۔ ہندی اخباروں کی تعداد کتنی ہے اور ہندوستان کی جو دیگر ۱۸ زبانوں میں ڈی۔ اے۔ وی۔ پی۔ اشتہار دیتا ہے۔ انکی تعداد کتنی ہے۔ اور ان الگ الگ زبانوں میں کتنا کتنا بجٹ ۹۵-۱۹۹۴ میں دیا گیا ہے۔ اگر روپیے میں بتا سکیں تو وہ بتا دیں اور اگر پرسینٹیج میں بتا سکیں تو بہتر زیادہ اچھا ہوگا۔ تاکہ کلیئر پوزیشن بنا لگ جائے۔]

SHRI K. P. SINGH DEO: Sir, the hon. Member wanted to know the number of English, Hindi and the language newspapers and how much has been paid and what the percentage is. Sir, English 259, percentage is 4.87, paid 42.31 per cent;—I am sorry I have only the percentage figured—Hindi 3,604, percentage is 67.72 and paid 30.93 percent; and Urdu 450, percentage is 8.46 and paid 3.64 per cent. For other newspapers, if the hon. Members wants details, I can give the information. Shall I give all the figures?

†[ ]Transliteration in Arabic Script

MR. CHAIRMAN: You send it to the hon. Member.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: सर, मंत्री जी के जवाब से एक बात बिल्कुल स्पष्ट रूप से सामने आ गई कि आज हमारे देश के अंदर जो डी०ए०वी०पी० का इरादा है जिसका मकसद है गांव, देहात तक, आम हिन्दुस्तानी तक अपनी आवाज को पहुंचाना और गवर्नमेंट के जो प्रोग्राम्स हैं उनको वहां तक पहुंचाना और उनको एजुकेट करना। मंत्री जी ने जो जवाब दिया है इससे यह साबित होता है कि डी०ए०वी०पी० उसमें बिल्कुल नाकाम है। सर, मैं यह जानना चाहता हूं कि जिन जुबानों के अखबारों की तादाद सिर्फ 259 है और हिन्दी जुबान के अखबारों की तादाद 3604 है यानी 67.2 है, इसका मतलब यह है कि 29 परसेंट दीगर जुबानों में अखबार निकलते हैं। तो यह कैसे जस्टिफाई किया जा सकता है कि 42 परसेंट बजट, यानी असल चीज है पैसा अखबारों को जिंदा रखने के लिए और मिडियम, स्मॉल तथा बिग की केटेगरी इसीलिए लगाई गई थी कि छोटे अखबारों को इस अंदाज से डील किया जाए कि वह जिंदा रह सकें। लेकिन आपने तो उनको मारने का काम किया हुआ है। आपका बजट 4.8 परसेंट अखबारों को तो जा रहा है 42 परसेंट और हिन्दी जो इस मुल्क में हमारी नेशनल जुबान है, कौमी जुबान है तथा जिसके 67 परसेंट अखबार निकलते हैं उसको आपका बजट 30 परसेंट जा रहा है। उसके अलावा जो 18 जुबान और हैं जिसके अंदर उर्दू है, बंगाली है, मराठी है, तेलगु है, यहां तक कि इस मुल्क की सबसे पुरानी जुबान जो सब जुबानों की मां है और जिससे सारी जुबानें निकली हैं, वह—संस्कृत सर, मेरे पास इसकी फिगर है जो शायद मंत्री जी के पास न हो। 1994 में संस्कृत जुबान का हिस्सा है, 15 परसेंट और उसको 1 परसेंट बजट दिया गया है। जितना उसका हिस्सा होना चाहिए था उससे 14 परसेंट कम है। तो यह जो अपनी जुबानों के साथ नाइंसाफी हो रही है, जैसे उर्दू जुबान के अखबार हिन्दी में सबसे ज्यादा हिन्दुस्तान में निकलते हैं। दूसरे नम्बर पर अंग्रेजी जुबान में नहीं बल्कि उर्दू जुबान में सबसे ज्यादा अखबार निकलते हैं और उसका हिस्सा है 8.57 परसेंट। लास्ट ईयर की फिगर मैं आपको पेश कर रहा हूं। उसके बाद तीसरे नम्बर पर अंग्रेजी का नम्बर आता है। सर, मैं यह जानना चाहता हूं कि...(व्यवधान)

MR CHAIRMAN: Please ask the question.

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: सर, मैं क्वेश्चन पूछ रहा हूं। कौन सी पौलिसी है जिसके तहत यह हिन्दुस्तान की जुबानों को मार रहे हैं, उनको कत्ल कर रहे हैं, उनके छोटे-छोटे अखबारों का गला घोट रहे हैं और **साथ** बजट ले जाकर के अंग्रेजी को देते हैं और उसके पीछे सिर्फ एक ही बात कही जाती है कि अंग्रेजी अखबारों की सर्क्यूलेशन बहुत है।

†[मंत्री محمد افضل عرف م۔ افضل :

سر، منتری جی کے جواب سے ایک بات بالکل شیشٹ روپ سے سامنے آگئی کہ آج ہمارے دیش کے اندر جو ڈی۔ اے۔ وی۔ پی کا ارادہ ہے جسکا مقصد ہے گاؤں دیہات تک۔ عام ہندوستانی تک اپنی آواز پہنچانا اور گورنمنٹ کے جو پروگرام ہیں انکو وہاں تک پہنچانا اور انکو ایجوکیٹ کرنا۔ منتری جی نے جو جواب دیا ہے اس سے یہ ثابت ہوتا ہے کہ ڈی۔ اے۔ وی۔ پی۔ اسکیم بالکل ناکام ہے۔ سر میں یہ جاننا چاہتا ہوں کہ جن زبانوں کے اخباروں کی تعداد صرف ۲۵۹ ہے اور ہندی زبان کے اخباروں کی تعداد ۳۶۰۴ ہے یعنی ۲ آشاریہ ۷ کا مطلب یہ ہے کہ ۲۹ پرسنٹ دیگر زبانوں میں اخبار نکلتے ہیں تو یہ کیسے جسٹیفائی کیا جا سکتا ہے کہ ۴۲ پرسنٹ بجٹ۔ بعض اہل چیز ہے پیسہ۔ اخباروں کو زندہ رکھنے کیلئے اور میڈم۔ اسمال اور بڑے کی کیٹیگری اسلئے لگائی گئی تھی کہ چھوٹے اخباروں کو اس انداز سے ڈیل کیا جائے کہ وہ زندہ رہ سکیں۔ لیکن آپنے تو انکو ماردے کا کام کیا ہوا ہے۔ آپکا بجٹ ۴۲ آشاریہ ۸ پرسنٹ اخباروں کو تو جا رہا ہے ۴۲ پرسنٹ اور ہندی جو ہمارے ملک کی نیشنل زبان ہے۔ قومی زبان ہے اور جسکے ۷۰ پرسنٹ اخبار نکلتے ہیں اسکو آپکا بجٹ ۳۰ پرسنٹ جا رہا ہے اسکے علاوہ جو ۱۸ زبان اور ہیں جیسے اردو ہے۔ بنگالی ہے۔ مراٹھی ہے۔ تیلگو ہے۔ یہانتک کہ اس ملک کی سب سے پرانی زبان جو سب زبانوں کی ماں ہے اور جس سے ساری زبانیں نکلی ہیں وہ ہے سنسکرت۔ سر۔ میرے پاس اسکی فیگر ہے جو شاید منتری جی کے پاس نہ ہو ۱۹۹۴ میں سنسکرت زبان کا حصہ ہے آشاریہ ۱۵ پرسنٹ اور آشاریہ ایک پرسنٹ بجٹ دیا گیا ہے۔ جتنا اسکا حصہ ہونا چاہیئے تھا اس سے آشاریہ ۱۴ پرسنٹ کم ہے۔ تو یہ جو اپنی زبانوں کے ساتھ ناانصافی ہو رہی ہے۔ جیسے اردو زبان کے اخباروں۔ ہندی میں سب سے زیادہ اخبار نکلتے ہیں اور اسکا حصہ ہے ۴۸ آشاریہ ۵ پرسنٹ لاسٹ ایئر کی فیگر میں آپلو پیش کیا گیا

†[] Transliteration in Arabic Script.

ہوں - اسکے بعد تیسرے نمبر پر انگریزی کا نمبر آتا ہے - میں یہ جاننا چاہتا ہوں کہ . . . " مداخلت"] . . . .

MR CHAIRMAN: Please ask the question.

†[شری محمد افضل محرف م -
افضل : سر - میں کوشچن پوچھ رہا ہوں - کونسی پالیسی ہے جسکے تحت یہ ہندوستانی زبان کو مار رہے ہیں - انکو قتل کر رہے ہیں - انکے چھوٹے چھوٹے اخباروں کا گلا گھونٹ رہے ہیں اور سارا بجٹ لے جاکر انگریزی کو دیدیتے ہیں اور اسکے پیچھے صرف ایک یہی بات کہی جاتی ہے کہ انگریزی اخباروں کی سرکولیشن بہت ہے]

मैं यह जानना चाहता हूं कि अंग्रेजी अखबार देहातों में पढ़ा जाता है? क्या अंग्रेज़ी अखबार कस्बों में पढ़ा जाता है? तो मैं यह जानना चाहता हूं कि हमारी जुबानों के साथ जो नाइंसाफी हो रही है और जिसको स्पष्ट रूप से मंत्री जी ने अपने जवाब से साहिबत कर दिया है तो क्या सरकार कोई ऐसी पॉलिसी बनाएगी कि अंग्रेज़ी का बजट जितने परसेंट अखबार अंग्रेजी में निकलते हैं, उतना दिया जाए, हिंदी के जितने परसेंट अखबार निकलते हैं। उनको उतना बजट दिया जाए और हमारी जो हिंदुस्तानी जुबानें हैं, उनके जितने परसेंट अखबार निकलते हैं, उतना दिया जाए?

†[شری محمد افضل محرف م -
افضل : " جاری " : میں جاننا چاہتا ہوں

†[[Transliteration in Arabic Script

کہ انگریزی اخباروں دیہاتوں میں پڑھا جاتا ہے - کیا انگریزی اخبار قصبوں میں پڑھا جاتا ہے - تو میں یہ جاننا چاہتا ہوں کہ ہماری زبانوں کے ساتھ جو ناانصافی ہو رہی ہے اور جسکو منسٹر وہ آپ سے منسٹری جی نے اپنے جواب سے ثابت کر دیا ہے تو کیا سرکار کوئی ایسی پالیسی بنائے گی کہ انگریزی کا بجٹ جتنے پرسنٹ اخبار انگریزی میں نکلتے ہیں اتنا دیا جائے - ہندی کے جتنے پرسنٹ اخبار نکلتے ہیں انکو اتنا بجٹ دیا جائے اور ہماری جو ہندوستانی زبانیں ہیں انکے جتنے پرسنٹ اخبار نکلتے ہیں اتنا دیا جائے]

MR. CHAIRMAN: Please conclude now.

श्री मोहम्मद अफज़ल उर्फ भीम अफज़ल: क्या सरकार ऐसा कोई ऐलान करेगी और पॉलिसी मुरत्तब करेगी? बहुत-बहुत शुक्रिया।

†[شری محمد افضل محرف م افضل :
کیا سرکار ایسا کوئی اعلان کرے گی اور پالیسی مرتب کرے گی - بہت بہت شکریہ]

SHRI K. P. SINGH DEO: Sir, the organisation—DAVP Directorate of Advertising and Visual Publicity release

advertisements on behalf of Ministries and Departments of The Government of India. Over 200 autonomous bodies and four public sector undertakings have been routing their advertisements through the DAVP and the advertisements which are issued to the newspapers are selected from the list of those empanelled with the DAVP for the purpose, keeping in view the publicity requirements, target, readership area and budgetary provisions. While issuing advertisements, the recommendations of the client Ministries and Departments are invariably taken into consideration. Therefore, since this specific question was about English, Hindi and the other languages, I would give the total figures for the year 1994-95. The big newspapers have received space in column centimetres-22,59,198. This is very pertinent. But they have received Rs. 16,53,92,689. The medium newspapers correspondingly have received in column centimetres 28,86,534. But in terms of amount they have received Rs. 67,94,007. Ths small newspapers have received comparatively less, 39,66,406 centimetres, but have received Rs. 4,81,49,369. Sir, what are the reasons for this aberration? Whereas the big newspapers have got less columns but have received more

but have received more amount, the small and medium newspapers have received more columns but have recieved less amount. That is because the circulation, the filling power of the newspapers. and the readership is one which is being insisted upon by the client Ministries for which the DAVP does the advertisement. Therefore, it is an aberration.and it is not as if DAVP does it on tis own. In 1977, there was the Rate Structure Committee. There is a policy guideline of 1980 which is still being followed and which has not been amended. In 1977, the Rate Contract Committee had based it on certain criteria, the new one in 1991 which had its report in 1993 based on something different and yet the Government apart from implementing it, has taken two more initiatives. Up to 50,000 i.e., small and half of the medium newspapers, up to 25,000 is small, and up to 25-75,000 is medium. Upto to 50,000, we have given them a range of 15 per cent flat. They were getting three advertisments, but now they are getting six advertisements and we have accepted the Rate Structure Committee which is not a Committee of only the Ministry of Information and Broadcasting, but there are other Minstries like the Ministry of Finance, etc. This Committee has gone into the entire rate structure and the structure of the newspapers. Sir, thirdly, there was a clause by which there were certain deductions. In fact, there was a penalty for efficiency. The deductions were: 12.5 per cent for the second edition, 17 per cent for the third edition, 25 per cent for the fourth edition, 32.5 per cent for the fifth edition, 35 per cent for the sixth and more editions. The Government has removed all that. So, there will be no penalty for efficiency. The small and medium news-papers will get 15 per cent flat rate, more than what the Rate Structure Committee had given. In addition, the Government has decided that instead of three, they will take six more advertisements.

The fourth point is that 85 per cent of the advertisements issued by the DAVP are mostly of the classified category, that is, tender, auction and recruitment notices which required to be widely circulated. These are the reasons why it is so. The English newspapers are published from every State whereas the regional newspapers are not published from every State. Therefore, there is this aberration. We have been reviewing it. We are still reviewing it. We are willing to review it. We are willing to have any prompt solution which is available to us.

MR. CHAIRMAN: Mr. Upendra.

SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL: Sir, I want your protection.

MR. CHAIRMAN: He has given an elaborate reply. What else you want?

SHRI MOHAMMED A ZAL *alias* MEEM AFZAL: Sir, I want your protection. मिनिस्टर साहब ने मेरी बात का जवाब नहीं दिया। He has explained his problems why he cannot distribute it from the amount available. अखबार जिन्दा रहता है पैसे से। अगर पैसा अखबार को नहीं मिलेगा तो छोटे अखबार जिन्दा नहीं रह सकते। मेरा बुनियादी सवाल यह है कि क्योंकि छोटे अखबारात् हिन्दुस्तान के हर हिस्से में पढ़े जाते है, छोटे अखबारात् गांव-देहात तक पढ़े जाते हैं। आपने कहा कि अंग्रेजी में बल्कसीफाइड इश्तिहारात् आपको देने है और ज्यादा सर्कुलेशन वाले टैडर नोटिस वगैरह देने होते है। लेकिन उससे सिर्फ शहर के लोग ही फायदा उठाते है। शहर के लोग ही टैडर में, मुलाजिमतों में और बाकी सब जगह पर इसका फायदा उठाते है। शहर के लोग ही टैडर में, मुलाजिमतों मे और बाकी सब जगह पर इसका फायदा उठाते हैं। तो मेरा कहना यह है कि क्या सरकार ऐसी कोई पालिसी बनाएगी कि छोटे अखबारात् को ज्यादा बजट दिया जाए और बड़े अखबारात् का बजट कम किया जाए क्योंकि बड़े अखबारात् को बजट देने के लिए प्राइवेट सैक्टर से काफी पैसा आ जाता है जब कि छोटे अखबारात् को देने के लिए प्राइवेट सैक्टर से कोई पैसा नहीं आता और सरकार का काम है कि छोटे अखबारों के जरिए गांवों और देहातों में अपनी बात को पहुंचाए।

†[ ]شری محمد افضل عرف م۔ افضل:
اخبار زندہ رہتا ہے پیسے سے۔ اور
پیسہ اخبار کو نہیں ملے گا تو چھوٹے
اخبار زندہ نہیں رہ سکتے۔ میرا
بنیادی سوال یہ ہے کہ کیونکہ چھوٹے
اخبارات ہندوستان کے حصہ میں
پڑھے جاتے ہیں۔ چھوٹے اخبارات
گاؤں دیہات تک پڑھے جاتے ہیں۔
آپنے کہا کہ انگریزی میں کلاسیفائیڈ
اشتہارات آپکو دینے ہیں اور زیادہ
سرکولیشن والے "ڈیکنر نوٹس" وغیرہ
دینے ہوتے ہیں لیکن اس سے صرف
شہر کے لوگ ہی فائدہ اٹھاتے ہیں۔
شہر کے لوگ ہی ٹینڈر میں، ملازمتوں
میں اور باقی سب جگہ پر اسکا فائدہ
اٹھاتے ہیں۔ تو میرا کہنا یہ ہے کہ
سرکار ایسی کوئی پالیسی بنائے گی کہ
چھوٹے اخبارات کو زیادہ بجٹ
دیا جائے اور بڑے اخبارات کا بجٹ
کم کیا جائے کیونکہ بڑے اخبارات
کو دینے کیلئے پرائیویٹ سیکٹر
سے کوئی پیسہ نہیں آتا اور سرکار
کا کام ہے کہ چھوٹے اخبارات کے
ذریعہ گاؤں اور دیہاتوں میں
اپنی بات کو پہنچائے۔

†[ ]Transliteration in Arabic Script

MR. CHAIRMAN: Mr. Upendra.

SHRI P. UPENDRA: Sir, according to the Minister's own admission, there is no equitable distribution of the advertisement kitty between the big, medium and small newspapers. The big newspapers, particularly the English newspapers are grabbing most of the amount because of the high advertisement rates, and the Department is not able to convince the big

newspapers to reduce their rates, whereas they are blackmailing the small newspapers to reduce the rates because they are at their mercy. Will the Minister consider giving equitable rates to the small and medium newspapers? Secondly, why should the Department concentrate the release of advertisements in Delhi in the DAVP whereas the policy is towards decentralisation? The previous practice used to be that the DAVP used to decide the rates for various newspapers and circulate them to the Ministries and the Public Sector Undertakings. They used to release advertisements according to the rates prescribed by the DAVP. Why should they concentrate now all this advertisment and maintain a big paraphernalia in the DAVP, having so many visualisers, artists, and executives and all that? Why can't they decentralise this and prescribe the rates? The third point is that a large amount is due to the newspapers and bills are not settled promptly for months and years, and the papers have to run to the DAVP to get their payments. Will the Minister streamline the payment machinery also?

SHRI K.P. SINGH DEO: Sir, the hon. Member has been my distinguushed predecessor in this Ministry, taking a lot of initiatives. I think, there is a serious examination of what he has said. The steps which the Government has taken of late, in the last one or two months, i.e. of removing the penalty—impostion of cuts-as well as increase in the rates to small and medium newspapers, were as a result of our interaction with the small and medium newspapers, after a directive from the Prime Minister. Therefore, we decided to increase it to 15 per cent as well as allow an increase in the number of advertisements. This is going to cost the exchequer Rs. 10 crores, which we are going to bear.

As far as the question of having equitable rates is concerned, in fact, it has already been engaging our attention. It was equitable up to 10,000. We will see if it can be practical and if it can be done, within the constraint of resources. This is a very good suggestion, but it would need a close scrutiny.

In regard to the number of bills pending, I would like to share the information with the House. We have streamlined it. We have computerised it. Up to 1.4.95, the mumber of bills pending was 24,630. Between 1.4.95 and 25.7.95, the number was 42,950. The total comes to 67,580. Today is the 1st of August. These 24,630 bills would be paid by the 1st of September; the other 42,950 bills would be aid by the 1st of October.

SHRI P. UPENDRA: What about decentralisation?

SHRI K.P. SINGH DEO: We will examine it.

श्री वीरेन्द्र कटारिया: मैं मंत्री साहब से जानना चाहता हूं कि डीएवीपी का इश्तहार देने का क्राइटेरिया क्या है? क्या कुछ अखबारों को ब्लैकलिस्ट कर रखा है? अगर कर रखा है तो उन अखबारों के नाम क्या हैं और उनको ब्लैकलिस्ट करने का आधार क्या है?

†[سنری ویریندر کٹاریہ: میں منتری صاحب سے جاننا چاہتا ہوں کہ ڈی-اے وی-پی-کے اشتہار دینے کا کرائٹیریا کیا ہے-کیا کچھ اخباروں کو بلیک لسٹ کر رکھا ہے-اگر کر رکھا ہے تو ان اخباروں کے نام کیا ہیں اور انکو "بلیک لسٹ" کرنے کا کیا آدھار ہے-]

SHRI K.P. SINGH DEO: The criterion is—as I mentioned in the earlier part of my answer — they have to fulfil certain requirements which are in the proforma. If they satisfy these requirements, they are empanelled.

†[ ]Transliteration in Arabic Script

As far as the question of balcklisting is concerned, I would require a fresh notice because I have to make enquiries. I do not have it readily.

प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा: मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि यह भेदभाव क्योंकि किया जा रहा है? आपने कहा कि पालिसी डिसीजन लिया जाता है। यह पालिसी डिसीजन लेने वाले लोग सारे के सारे अंग्रेजी समर्थक हैं और वे भारतीय भाषाओं के, हिन्दी के, संस्कृत के विरोधी हैं क्या यह सत्य नहीं है? अंग्रेजी पेपर को जो इतना ज्यादा दिया जा रहा है इसके बारे में इंक्वायरी करके कोई कदम उठायेंगे? क्या यह भी ठीक है कि क्रिटीकल, टफनैस, डिफिकल्ट और परपोर्ट एडवर्टीजमैंट्स बैन कर दिये हैं और दूसरे एडवर्टीजमैंट्स ज्यादा दिये जाते हैं? इसका फैसला क्या मिनिस्टर महोदय खुद करते हैं कि कौन-कौन से पेपर एमेनेबल नहीं है और उनको कम एडवर्टीजमैंट दिये जाते हैं या उस पर प्रतिबंध लगा दिया जाए? यह सार भेदभाव किया जा रहा है डीएवीपी की तरफ से। हिन्दुस्तान में कांग्रेस का समर्थन प्राप्त करने के लिए आने वाले दिनों में, जबकि इलेक्शन आ रहे हैं, पेपर्स की ट्विस्ट करने की जो पालिसी है क्या उस पालिसी के बारे में प्रकाश डालेंगे?

SHRI K.P. SINGH DEO: Sir, first and foremost, I would like to say, with all the emphasis at my command, that there is no discrimination; there is no arm-twisting. As I said, the policy guideline, the advertisement policy guideline is of 1980. This is what we are following even today, even in 1995. this has not been amended; not even in 1991. Probably, it has stood the test of time. But as I said, the main criteria were: the circulation and the pulling power of the newspaper. Even in regard to the rate...*(Interruptions)*...

प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा: हिन्दी का पांच लाख सरकुलेशन है और अंग्रेजी का 5 हजार लेकिन अंग्रेजी को ज्यादा देते हैं। पांच लाख सरकुलेशन है हिन्दी के पेपरों का उनको आप ज्यादा नहीं देते हैं। आप सरकुलेशन का क्या हिसाब बता रहे हैं? पांच हजार मुश्किल से छपता है अंग्रेजी अखबार get five times more advertisement than the Hindi newspapers with a circulation of five lakhs.

SHRI K.P. SINGH DEO: If the circulation is more, they will get more. Sir, the Rate Structure Committee is not an in-house Committee. *(Interruptions)*

प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा: पंजाब केसरी और दूसरे हिन्दी के पेपर्स का सरकुलेशन अंग्रेजी के अखबारों से तीन गुना है।

श्री शंकर दयाल सिंह: आप अगर विदेशी भाषाओं को देते हैं तो भारतीय भाषाओं को भी दीजिए।

SHRI K.P. SINGH DEO: Even though it was an expert opinion the Rate Structure Committee was set up in 1991, not by our Government, but by the previous Government.... we took the recommendations but added our own innovation to the small, and part of the medium newspapers, that is, up to 50,000 circulation. Whatever the Rate Structure Committee had recommended, we gave 15 per cent more all down the scale, and also we doubled the advertisements. That is how we have been trying to help the small and medium newspapers and, in spite of the expert committee, Government has taken this initiative. But it is subject to periodic review, and we will review it again in the light of what hon. Members have said, and we will see if something more is practicable within the constraints of our resources.

आकाशवाणी द्वारा प्रसारित किये जाने वाले समाचारों का संकलन

*23. **श्री सतीश प्रधान:** क्या सूचना और प्रसारण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि आकाशवाणी अन्य देशों द्वारा प्रसारित किये जाने वाले समाचारों को संकलित करती है;

(ख) यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है; और

(ग) इस समय कौन-कौन से देशों से प्रसारित किये जाने वाले समाचार संकलित किये जा रहे हैं और कौन-कौन सी भाषाओं के समाचार संकलित किये जा रहे हैं?